नई सोच, नया आयाम

RNI No. CHHHIN/2009/35020

जोहार छत्तीसगढ़

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 235 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆मूल्य: 2 ₹ ◆पृष्ठ : 4

धरमजयगढ़, सोमवार 4 जुलाई 2022

पेज -3 पर खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत के हाथों डॉ. रोहित कुमार...

कांग्रेस नेता सूर्यकांत और अन्यों के यहां आयकर विभाग ... पेज -4 पर

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

एक नजर

राज्यपाल सुश्री उइके से पूर्व सांसद ने की सौजन्य भेंट

रायपुर। राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके से आज यहां राजभवन में राज्यसभा की पूर्व सांसद सुश्री विप्लव ठाकुर ने सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर दोनों के मध्य महिला सशक्तिकरण,महिलाओं की बेहतरी के लिए उपाय करने एवं अन्य सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई। राज्यपाल सुश्री उइके और सुश्री ठाकुर ने पूर्व में राज्यसभा में सांसद के रूप में एक साथ काम किया है। इस दौरान उन्होंने पुरानी स्मृतियों को याद किया। सुश्री ठाकुर वर्ष 2006 से वर्ष 2020 के बीच अनेकों बार राज्यसभा सांसद के पद पर रहीं।

फैक्ट्री का ताला तोड़कर चोरी

रायपुर । गोंदवारा स्थित ममता सोलर फैक्ट्री का ताला तोड़कर अज्ञात चोर लोहे का सामान पार कर दिए। चोरी गए सामानों की कीमत करीब 90 हजार रूपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर खमतराई पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी रजत अग्रवाल 26 वर्ष शिवाजी पार्क सड्डू का रहने वाला है। प्रार्थी का गोंदवारा में ममता सोलर फैक्ट्री है।

मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य केन्द्र के स्वास्थ्य कर्मचारियों की प्रशंसा की

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भेंट मुलाकात कार्यक्रम के तहत कोरिया जिले के बैंकुण्ठपुर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पोंड़ी-बचरा स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सकों एवं वहां भर्ती मरीजों से मुलाकात की।

मुख्यमंत्री ने प्रसूता वार्ड में शिशुवती महिला श्रीमती फूलबसिया और श्रीमती संतोषी का हाल चाल जाना और उन्हें बधाई व शुभकामनाएं देते हुए फलों की टोकरी, बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र तथा जननी सुरक्षा योजना के तहत 1400-1400 रुपये का चेक प्रदान किया।

मुख्यमंत्री ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्टाफ नर्स श्रीमती उनीता सिंह की 7 महीने की नन्हीं बच्ची गरिमा को दुलारते हुए गोद में उठा लिया। ड्यूटी पर श्रीमती उनीता सिंह के साथ आई उनकी नन्ही बेटी गरिमा को प्यार करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा- ये भी डॉक्टर बनेगी। उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ओपीडी, पंजीयन काउंटर, परिचारिका कक्ष, प्रसूता कक्ष आदि का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री स्वास्थ्य केंद्र में मलेरिया ज्वर के इलाज के लिए भर्ती ग्राम सकरिया की श्रीमती सुमति देवी का हाल चाल पूछा और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

मुख्यमंत्री ने बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र तथा जननी सुरक्षा योजना का चेक प्रदान किया

मुख्यमंत्री को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के स्टाफ ने अवगत कराया कि स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना 1967 में कई गयी थी। प्रतिमाह 50 से 60 डिलीवरी स्वास्थ्य केंद्र में होती है। उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मचारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और उन्हें

प्रोत्साहित करते हुए कहा कि 'अच्छे से लोगों की सेवा करें'।

रायपुर-अंबिकापुर में जेल अधीक्षक और मुख्यालय में स्थायी डीआईजी का इंतजार

जेल महकमा में कई पद खाली, प्रभारी अधिकारियों के भरोसे काम

रायपुर. छत्तीसगढ़ का जेल महकमा प्रभारी अधिकारियों के भरोसे चल रहा है। जेल मुख्यालय के डीआईजी, रायपुर जेल अधीक्षक और अंबिकापुर जेल अधीक्षक के सेवानिवृति के बाद अब तक किसी की स्थाई नियुक्ति नहीं की गई है।

वहीं जेल मुख्यालय द्वारा विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) के लिए अब तक कोई बैठक तक नहीं बुलाई गई है। जेल डीजी संजय पिल्लै डीआईजी का अतिरिक्त प्रभार देख रहे है। वहीं रायपुर जेल अधीक्षक का प्रभार दुर्ग जेल अधीक्षक योगेश क्षत्री और अंबिकापुर जेल अधीक्षक का अतिरिक्त प्रभार स्थानीय कलेक्टर ठाकुर राम सिंह को सौंपा गया है। बता दें कि केके गुप्ता जेल डीआईजी जेल और अधीक्षक दोहरे पद पर पदस्थ थे। 30 अप्रैल को उनकी सेवानिवृति के बाद डीआईजी का पद अब तक रिक्त है। वहीं 30 जून को अंबिकापुर जेल अधीक्षक राजेन्द्र गायकवाड़ और जगदलपुर उपजेलर मंगतलाल पुरैना भी सेवानिवृत हो गए हैं। गृह विभाग के सूत्रों ने बताया कि चार प्रमुख पदों पर तीन अधिकारियों की विदाई को देखते हुए जल्दी ही पदोन्नति के साथ ही फेरबदल होगा। सभी 5 केंद्रीय जेल रायपुर, दुर्ग अंबिकापुर, जगदलपुर और बिलासपुर केंद्रीय जेल के अधिकारी प्रभावित हो सकते है।

आईपीएस को जिम्मेदारी देने की तैयारी

आईपीएस को जिम्मेदारी देने की तैयारी जेल मुख्यालय में डीआईजी की जिम्मेदारी किसी आईपीएस को दिए जाने के संकेत मिले है। गृह विभाग आधिकारिक सूत्रों का कहना है कि जल्दी ही इस संबंध में निर्णय लिया जाएगा। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की स्वीकृति मिलते ही आदेश जारी किया जाएगा। हालांकि वरिष्ठता के आधार पर जेल महकमे के मूल कैडर के वरिष्ठ अधिकारी एवं बिलासपुर जेल अधीक्षक एसएस तिग्गा को डीआईजी बनाए जाने पर भी विचार चल रहा है।

जीएसटी क्षतिपूर्ति बंद, अब विकल्पों की तलाश

सिंहदेव बोले-केंद्र ने राह नहीं निकाली तो सेस लगाना पड़ेगा; राज्य को 14 हजार करोड़ का नुकसान

रायपुर। केंद्र सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर (GST) प्रणाली से राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान से बचाने के लिए 14% क्षतिपूर्ति का जो मॉडल बनाया था वह 30 जून को खत्म हो गया। अब राज्य सरकार इस नुकसान की भरपाई की राह तलाश रही है।

छत्तीसगढ़ के वाणिज्यिक कर मंत्री टीएस सिंहदेव ने केंद्रीय वित्त मंत्री को इसके लिए पत्र लिखा है। सिंहदेव का कहना है, अगर केंद्र सरकार ने राह नहीं निकाली तो राज्य सरकार को वस्तुओं पर सेस (उपकर) लगाना होगा।

स्वास्थ्य, पंचायत, ग्रामीण विकास और वाणिज्यिक कर मंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा, हमने केंद्रीय वित्त मंत्री को लिखे पत्र में दो विकल्प रखे हैं। पहला यह कि राज्यों को त्रस्ज्ञ क्षतिपूर्ति और 14% संरक्षित राजस्व को अगले पांच सालों के लिए जारी रखा जाए। और दूसरा- केंद्र और राज्य के बीच करों का बंटवारा जो अभी 50-50 के अनुपात में होता है उसे 80-20 अथवा 70-30 के अनुपात में बांटा जाए। इसका मतलब यह है कि अगर केंद्र सरकार राज्यों को नुकसान की भरपाई नहीं कर पा रही है तो करों का 70 से 80त्न हिस्सा राज्य को दे और शेष 20 से 30% हिस्सा खुद रखे। सिंहदेव ने कहा कि अगर ऐसा नहीं हुआ तो राज्यों को बहुत नुकसान होगा। वे अपने राज्य में विकास कार्यों और सामान्य कामकाज के संचालन के लिए भी केंद्र सरकार पर निर्भर हो जाएंगी। राज्य सरकारों ने कर लगाने का अधिकार पहले ही GST काउंसिल में निहित कर दिया है।

रोजगार के लिए दंडवत हो गए सफाईकर्मी

बोले- हमें रोजगार दे दो साहब

रायपुर। सरकारी स्कूल के सफाईकर्मी रायपुर में हड़ताल कर रहे हैं। मगर इनकी कोई सुन नहीं रहा। अब तंग आकर इन कर्मचारियों ने दंडवत प्रणाम किया। ये प्रणाम शिक्षा विभाग के अफसरों को था जो सफाईकर्मियों से अब तक काम लेते रहे मगर कभी इनके वेतन और दूसरी परेशानियों पर गौर नहीं किया। रायपुर के धरना स्थल पर प्रदर्शनकारी जमा हुए और लेटकर जिम्मेदारों को प्रणाम किया। आस-पास के मंदिर जाकर सफाईकर्मियों ने मन्नत मांगी की ईश्वर प्रशासनिक अफसरों को बुद्धी दे और इनकी समस्या हल हो, मांगे पूरी हो। ये सफाई कर्मी नियमितिकरण की मांग लेकर रायपुर में आंदोलन कर रहे हैं।

पूरे प्रदेश से जुटेंगे सफाईकर्मी

प्रदेश अलग-अलग इलाकों में सरकारी स्कूल में ये कर्मचारी सफाई कर काम कर रहे थे। बीते 4 महीनों से रायपुर में धरना दे रहे हैं। इन्होंने काम बंद कर दिया है। अब कह रहे हैं जब तक नियमित नहीं किया जाता काम पर नहीं लौटेंगे। 3 जुलाई को प्रदेश के सभी जिलों से सफाईकर्मी रायपुर पहुंच रहे हैं। ये CM आवास का घेराव करने रैली निकालेंगे। अंशकालीन सफाईकर्मी संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि 2300 रुपए देकर हमसे स्कूल को साफ करवाया जाता है ही, इसके अलावा स्कूल के दूसरे काम भी करवाए जाते हैं। हमें नियमित किए जाने का वादा किया था मगर अब ये वादा पूरा नहीं हुआ।

पत्नी ने मार दी पति को कैंची

रायपुर । मामूली बात में पत्नी ने पति पर कैंची से हमला कर घायल कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर खम्हारडीह पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार एकता चौक खम्हारडीह निवासी प्रार्थी कमलेश सेन 30 वर्ष ने थाने में शिकायत किया कि आरोपिया पत्नी हितैशी सेन 27 वर्ष अपनी मां से प्रार्थी के बारे में बात कर रही थी और गाली-गलौज कर रही थी। जिससे प्रार्थी ने मना किया तो आवेश में आकर उसकी पत्नी ने कैंची से भुजा के पास मारकर चोट पहुंचाया। प्रार्थी की शिकायत पर खम्हारडीह पुलिस ने आरोपिया के खिलाफ धारा 294, 506, 323 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

योजनाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं, यह जानने के लिए दूरस्थ वनांचलों से भेंट-मुलाकात कार्यक्रम की शुरूआत की: मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बैकुण्ठपुर विधानसभा क्षेत्र में भेंट मुलाकात की शुरूआत ग्राम पोंड़ी-बचरा की देवगुड़ी में विधिवत पूजा-अर्चना से की।

भेंट-मुलाकात कार्यक्रम

मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की मांग पर पोंड़ी-बचरा में उच्च शिक्षा के लिए नवीन महाविद्यालय, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल, स्वास्थ्य सुविधा को बेहतर बनाने के लिए पोंड़ी-बचरा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उन्नयन, बैंकिंग सुविधा विस्तार के लिए सहकारी बैंक की शाखा, पुलिस सहायता केंद्र का पुलिस चौकी में उन्नयन, सु-व्यवस्थित आवागमन के लिए ग्राम मनसुख के पास घनुहर नाले पर नए पुल के निर्माण और ग्राम सकरिया में नवीन विद्युत सब स्टेशन स्थापित करने की घोषणा। मुख्यमंत्री के ग्राम पोंड़ी-बचरा पहुंचने पर मांदर, नगाड़े की थाप और सेवा गीत की धुन पर स्थानीय नाचा दल ने उत्साहपूर्वक उनका स्वागत किया। रेशम महिला समूह जामपारा की सदस्य श्रीमती अन्नपूर्णा सिंह ने मुख्यमंत्री को महिलाओं द्वारा टसर के धागों से बनी मलबरी कोसा की माला भेंट की।

मौसम... मौसम विभाग का अलर्ट

बदला मौसम का मिजाज, भारी बारिश संभावना

पूरे देश में मौसम का मिजाज बदल गया है। देश के कई इलाकों में मानसून मेहरबाना है और जमकर बारिश हो रही है। मौसम विभाग) के वरिष्ठ वैज्ञानिक आर के जेनामनी के मुताबिक दक्षिण-पश्चिम मानसून उत्तरी अरब सागर, गुजरात और राजस्थान के शेष हिस्सों में आगे बढ़ गया है। इस प्रकार, इसने 8 जुलाई की सामान्य तिथि के मुकाबले शनिवार को पूरे देश को कवर कर लिया है।

दक्षिण-पश्चिम यानी मानसून ने आठ जुलाई की अपनी सामान्य तारीख से छह दिन पहले ही पूरे देश में दस्तक दे दी है। आपको बता दें कि एक जून की सामान्य तिथि से तीन दिन पहले 29 मई को दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत केरल में हुई थी। एमआईडी के मुताबिक जुलाई में देश में अच्छी बारिश होगी।

एमआईडी ने आज राजस्थान, पूर्वी गुजरात, कोंकण और गोवा, तटीय कर्नाटक, केरल के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल, दक्षिण-पश्चिम मध्य प्रदेश और पूर्वी मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के अलग-अलग हिस्सों में बारिश के आसार जताए हैं।

वहीं शेष पूर्वोत्तर भारत, गंगीय पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तटीय आंध्र प्रदेश, लक्षद्वीप, दिल्ली के कुछ हिस्सों, हरियाणा और जम्मू कश्मीर में भी बारिश का अनुमान जताया है।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

इसके साथ ही राजस्थान के शेष हिस्सों, सौराष्ट्र और कच्छ, बिहार, झारखंड, गंगीय पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंतरिक कर्नाटक, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में भी आज बारिश का पूर्वानुमान है।

निजी मौसम पूर्वानुमान ऐजेंसी स्काईमेट वेदर के मुताबिक, पंजाब से पूर्वी पश्चिम ट्रफ रेखा हरियाणा, दक्षिण उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर मध्य प्रदेश, उत्तरी छत्तीसगढ़, झारखंड और पश्चिम बंगाल होते हुए बंगाल की खाड़ी के उत्तर पश्चिम तक फैली दिखाई दे रही है। दक्षिण गुजरात तट से उत्तरी कर्नाटक तट तक एक अपतटीय ट्रफ रेखा बनी हुई है। जबकि पश्चिम मध्य अरब सागर के ऊपर एक चक्रवाती परिसंचरण औसत समुद्र से 3.1 से 5.8 किमी ऊपर है। यह ऊंचाई के साथ दक्षिण की ओर झुका हुआ है।

छत्तीसगढ़ में पहली बार लाखों की सर्जरी मुफ्त

देश के बेस्ट स्पाइन और ऑर्थोपेडिक सर्जन पहुंचे रायपुर

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में स्पाइन और ऑर्थोपेडिक सर्जरी का एक बड़ा अभियान चलाया गया है। इसके तहत श्री नारायणा अस्पताल में निशुल्क सर्जरी की जा रही है । ऐसे मरीज जो आर्थिक रूप से कमजोर है स्पाइन या अपने जोड़ों का इलाज नहीं करवा पा रहे थे उन्हें मदद दी जा रही है। इस तीन दिवसीय सर्जरी अभियान में देश के जाने-माने एक्सपर्ट शामिल हो रहे हैं। जो दिल्ली मुंबई और बेंगलुरु से रायपुर पहुंचे हैं। अस्पताल के संचालक डॉ सुनील खेमका ने बताया कि इस अभियान के तहत जरूरतमंद लोगों की सेवा

की जा रही है। हमने 50 सर्जरी करने का लक्ष्य रखा है । इस दौरान मरीज से एक भी रुपया नहीं लिया जा रहा है दवाएं भी अस्पताल की तरफ से दी जा रही है। स्पाइन और आर्थोपेडिक सर्जरी आमतौर पर 6 से 10 लाख रुपए के खर्च पर होती है यहां मरीजों को निशुल्क सेवा दी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने की तारीफ

इस कैंपेन के उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी शामिल हुए। उन्होंने अस्पताल की तरफ से मेगा ऑर्थोपेडिक एवं स्पाइन सर्जरी कांफ्रेंस आयोजित करने पर चिकित्सकों को बधाई दी ।

संसार-सरकार के समक्ष स्वतंत्र सोच, त्रुटियों की गुंजाइश दरकिनार करने का माद्दा

मैं यूं तो उत्तर भारत में बड़ा हुआ, लेकिन मेरे घर पर जो अखबार आता था, उसका मुख्यालय एक महान शहर में था, जिसे तब कलकत्ता कहा जाता था। यह अखबार था, द स्टेट्समैन। इसके मुख्य संस्करण का प्रकाशन ब्रिटिश भारत की पहली राजधानी से होता था और उसके कुछ छोटे संस्करण ब्रिटिश राज की दूसरी और आखिरी राजधानी से प्रकाशित होते थे।
देहरादून स्थित हमारे घर पर इस अखबार का दिल्ली संस्करण आता था।

मेरे पिता तीन वजहों से द स्टेट्समैन मंगवाते थे = वह सोचते थे कि अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाले सारे भारतीय अखबारों से इसमें बहुत कम अशुद्धियां और त्रुटियां होती हैं, और इसलिए भी, क्योंकि कभी उनके एक प्यारे भतीजे ने वहां काम किया था। मैं खुद इस अखबार को पसंद करने लगा था और इसके मेरे अपने कारण थे = विदेशी मामलों की इसकी शानदार कवरेज- मुझे विशेष रूप से इसके जेम्स कॉउले के लंदन लेटर्स की याद है- के लिए, इसके तीसरे विनोदपूर्ण संपादकीय के लिए और अंग्रेजी गद्य के मास्टर तथा प्रकृतिवादी एम कृष्णन के स्तंभ के लिए।

दिल्ली यूनिवर्सिटी में जाने के बाद भी मैं द स्टेट्समैन लेता रहा। हालांकि अर्थशास्त्र में दो डिग्रियों की पढ़ाई के लिए पांच साल वहां गुजारने के दौरान मैंने देखा कि

भारत सरकार ने नए वन विधेयक का मसौदा तैयार किया था और मैंने इसकी तीखी आलोचना की थी। लेकिन जिस दिन इस लेख को द टेलीग्राफ में छपना था, उसके एक दिन पहले अमिताभ बच्चन कुली फिल्म की शूटिंग के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए, जिससे उसका प्रकाशन अनिश्चितकाल के लिए टल गया।

अखबार में गिरावट आ रही है। कृष्णन वहां लिख रहे थे, लेकिन काउली ने छोड़ दिया था और कुछ अन्य ऐसे लेखक भी वहां से जा

अखबार से लेखक का रिश्ता

चुके थे, जिन्हें मैं पसंद करता था। सर्वाधिक परेशान करने वाली बात यह थी कि संपादकीय और प्रबंधन की दीवार को ढहाते हुए अखबार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने फ्रंट पेज पर अपने नाम से कॉलम शुरू कर दिया। यह कायदे के विपरीत तो था ही, अपठनीय भी था। 1980 में मैं समाजशास्त्र में डॉक्टरेट करने कलकत्ता चला गया था। यदि मैं नई दिल्ली में होता तो शायद मैं द इंडियन एक्सप्रेस लेता, लेकिन कलकत्ता में उसका कोई संस्करण नहीं था, सो मुझे स्टेट्समैन ही लेना पड़ा, जो कि तब तक मरणासन्न हो गया था, लेकिन रोज निकल रहा था। इसीलिए सात जुलाई, 1982 को द टेलीग्राफ का पहला संस्करण निकलने पर मैंने राहत और उत्साह के साथ उसका स्वागत किया। हमारे इंस्टीट्यूट के परिसर में अखबार देने वाला युवक भी बहुत उत्साहित था। वह यह अखबार लहराते हुए हमारे हॉस्टल में आया (यह तब की बात है जब हमने अखबार को उत्पाद मानना शुरू नहीं किया था) और टेलीग्राम! टेलीग्राम! चिल्लाने लगा। वह गलत उच्चारण कर रहा था, लेकिन कुछ हद तक मैं इसे आज भी टेलीग्राम ही कहना चाहूंगा। द टेलीग्राफ के बारे में मुझे सबसे पहली बात यह लगी कि इसे कितनी खूबसूरती से बनाया गया था। मेरा सौंदर्यबोध, जो पहले निष्क्रिय था, अहमदाबाद में ग्राफिक डिजाइन की पढ़ाई कर रही बंगलूरू की एक लड़की के साथ कुछ वर्षों तक डेट करने के बाद जागृत हो गया था।

लेकिन इस रिश्ते को अलग रखकर भी मैं देख सकता था कि न केवल स्टेट्समैन, बल्कि टाइम्स ऑफ इंडिया और द इंडियन एक्सप्रेस की तुलना में द टेलीग्राफ को पकड़ना, महसूस करना और देखना कितना अधिक आकर्षक था। उस समय के किसी भी अन्य भारतीय समाचार पत्र की तुलना में यह बेहतर दिखता था और जिसे आसानी से पढ़ा जा सकता था; मास्टहेड भी आकर्षक था; और अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में इसमें फोटोग्राफिक छवियों का उपयोग कहीं अधिक और प्रभावकारी तरीके से किया गया था। जल्द ही मैंने पाया कि इसकी रिपोर्ट्स, लेख और संपादकीय अत्यंत पठनीय थे। द टेलीग्राफ के संस्थापकों में कॉलेज के दिनों के मेरे एक पुराने दोस्त परंजय गुहाठाकुरता भी थे। कई बार मैं ठाक, जैसा कि उन्हें इस नाम से जाना था, जोका स्थित अपने इंस्टीट्यूट से प्रफुल्ल सरकार स्ट्रीट स्थित अखबार के दफ्तर तक जाता था। न्यूजरूम में उत्साह और काम की तेजी नजर आती थी, यहां युवाओं का एक समूह द स्टेट्समैन के किले को ढहाकर इसे कलकत्ता का सर्वाधिक पसंदीदा अखबार बनाने के लिए प्रतिबद्ध नजर आता था। वह पूरे भारत में भी छाप छोड़ने की उम्मीद करते थे। ठाक ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अखबार के लिए कोई लेख दे सकता हूं। उसी समय भारत सरकार ने नए वन विधेयक का मसौदा तैयार किया था; और मैंने इसकी तीखी आलोचना की थी। ठाक ने मुझसे आग्रह किया कि मैं यह लेख छपने के लिए द टेलीग्राफ को दे दूं। मैंने वह लेख दे दिया, लेकिन जिस दिन इस लेख को छपना था, उसके एक दिन पहले अमिताभ बच्चन कुली फिल्म की शूटिंग के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए।

सुधीश पचौरी

संपादकीय

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का दौर

साफ है कि देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण अधिक तेज हो गया है। परिणाम है कि अर्थव्यवस्था और रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े दूसरे तमाम मुद्दे चुनावी नतीजे के लिहाज से अप्रासंगिक हो गए हैं। पंजाब में सिमरनजीत सिंह मान का लगभग राख से उठ खड़ा होना एक महत्त्वपूर्ण संकेत है। मान ने खालिस्तान के प्रति अपना समर्थन को कभी नहीं छिपाया। इस साल ऑपरेशन ब्लू स्टार की बरसी पर अमृतसर के अकाल तख्त में जब खालिस्तान समर्थक नारे लगाए गए, तब मान वहां मौजूद थे। ये बात ध्यान में रखने की है कि लंबे समय तक मान पंजाब की राजनीति में हाशिये पर रहे।

लेकिन अब अचानक उन्होंने दमदार वापसी की है। यह आखिर क्या बताता है? क्या यह पंजाब में सांप्रदायिक आधार पर फिर से हो रहे ध्रुवीकरण का संकेत नहीं है? अब ध्यान उत्तर प्रदेश की तरफ ले जाएं। पंजाब के संगरूर की तरह वहां रविवार को आजमगढ़ और रामपुर के चुनाव नतीजे आए। इन दोनों सीटों को कभी समाजवादी पार्टी के लिए बिल्कुल सुरक्षित समझा जाता था। वजह इन दोनों जगहों पर मुस्लिम मतदाताओं की बहुतायत है। लेकिन इस बार दोनों सीटें सपा हार गई। सीधा संकेत है कि रामपुर में सपा के मुस्लिम उम्मीदवार के खिलाफ हिंदू मतदाताओं की पूर्ण गोलबंदी हुई। उधर आजमगढ़ में चूंकि बसपा का उम्मीदवार मुस्लिम था, तो मुसलमानों ने उसे अपनी पसंद बनाया। बसपा वहां लगभग दो लाख 70 हजार वोट ले गई। इन तीनों नतीजों को एक साथ जोड़ कर देखें, तो साफ होता है कि देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण अधिक तेज हो गया है।

हिंसा पर मनुष्य का दर्शक बन जाना, बदलाव का नतीजा

उदयपुर की हृदय विदारक घटना, जिसमें दो सिरफिरे युवकों ने सरे बाजार एक दर्जी की दुकान में घुसकर उसकी नृशंस हत्या कर दी, ने एक बार पुनः ये साबित कर दिया है कि समाज में मनुष्य बहुत तेजी से दर्शक बनते जा रहे हैं। दर्शक भी ऐसे जिसमें विवेक, विचार और बुद्धि काम नहीं करती। जो किसी घटना को देखकर मदद के लिए नहीं, बल्कि अपनी जान बचाने के लिए भागता है।

कई बार वह उस घटना को अपने मोबाइल फोन के कैमरे में कैद कर लेने की होड़ में खो जाता है। मनुष्य ऐसा नहीं होता। मनुष्य सामाजिक होता है। जरूरत पड़ने पर दूसरे मनुष्य की मदद को तत्पर। मगर धीरे-धीरे समाज का मनोविज्ञान बदल गया है। अब मनुष्य असामाजिक होता जा रहा है। आभासी दुनिया में सिमटा हुआ। फेसबुक पर अनजान लोगों के दुख में दुख व्यक्त करता है, लेकिन असल जीवन में किसी की मदद करना उसे किसी पचड़े में पड़ना जान पड़ता है।

हम आए दिन देखते-सुनते हैं कि सड़क पर होती हिंसा को मनुष्य सिर्फ दर्शक की तरह निहारता है, मदद के लिए आगे नहीं आता। विगत मंगलवार की दोपहर को उदयपुर के बाजार में जब कन्हैयालाल पर ताबड़तोड़ वार हो रहे थे, तो उनकी मदद के लिए सिर्फ ईश्वर सिंह सामने आए जो कि

नफरत के बीज

उदयपुर के बाजार में जब कन्हैयालाल पर ताबड़तोड़ वार हो रहे थे, तो उनकी मदद के लिए सिर्फ ईश्वर सिंह आगे आए, जो उस दुकान में काम करते थे। किसी और ने आगे आकर उन दो दरिंदों को दबोचने की जहमत नहीं उठाई।

उसी दुकान में काम करते थे। बाकी किसी ने आगे आकर कन्हैयालाल को बचाने की या घटना के बाद उन दो दरिंदों को दबोचने की जहमत नहीं उठाई। सड़क पर जब कोई दुर्घटना होती है, तो लोग दाएं-बाएं से निकल जाते हैं, मदद के लिए रुकते नहीं, कुछ करते नहीं। यदि किसी को कोई अपराध घटित होता दिखता है, तो वह नजर बचाकर या तो भाग जाता है या भीड़ में छिपकर तमाशबीन बन जाता है। वैसे ही जैसे भीड़ में दूसरे लोग खड़े होते हैं। भीड़ में मनुष्य के व्यक्तित्व का विलीन होना आसान होता है। अपराधबोध भी नहीं रहता। यह एक मनोवैज्ञानिक द्वंद्व भी हो सकता है कि मदद करें कि न करें। लेकिन इस द्वंद्व से मनुष्य प्रभावित हो सकता है, भीड़ नहीं।

भीड़ की कोई पहचान नहीं होती, कोई चेतना नहीं होती। भीड़ मदद को आगे बढ़े, तो क्या मजाल कि कोई घटना घटित हो जाए। उदयपुर की घटना पहली घटना नहीं है, न ही आखिरी होगी। समाज नामक इकाई का क्षीण होना एक सतत प्रक्रिया है। मार्शल मैकलुहान ने जब ग्लोबल विलेज की परिकल्पना की थी, तो उनका अनुमान था कि विश्व में गांव के गुण परिलक्षित होंगे। गांव का एक सामूहिक चरित्र होता है। लोग एक भाषा बोलते हैं, एक जैसे परिधान धारण करते हैं और तीज-त्योहार सामूहिक रूप से मनाते हैं। शहर व्यक्तिवादी होते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि संस्कृति गांव में जन्म लेती है और वहीं फलती-फूलती है। विश्व ग्लोबल तो बन गया, लेकिन विलेज न बन पाया। गांव में मदद करने का जो नैतिक साहस होता है, वह शहर में नहीं मिलता। कई बार अपराध या अपराध की आशंका की सूचना देना ही मनुष्य का अपराध बन जाता है। मुझे याद है, कुछ साल पहले हमारी सोसायटी में एक अपराध की घटना हुई जिसमें मुझे गवाह के तौर पर पेश किया गया था। उस घटना के कई साल बाद एक दिन अचानक थाने से सूचना आई कि मेरे खिलाफ अदालत से समन आया है। मेरे होश फाख्ता हो गए।

राकेश गोस्वामी

मिला जुला

विधानसभा में बीजेपी उम्मीदवार को वोट देने का आदेश

शिंदे ने शिवसेना विधायकों के लिए जारी किया व्हिप

महाराष्ट्र में सियासी उलटफेर के बीच अब विधानसभा का विशेष सत्र शुरू होने जा रहा है. जहां पहले दिन विधानसभा स्पीकर का चुनाव होना है. इसके लिए वोट डाले जाएंगे, लेकिन सवाल ये है कि बागी विधायक कौन से व्हिप का पालन करेंगे? शिवसेना की तरफ से दावा किया जा रहा है कि पार्टी व्हिप का उल्लंघन करते ही विधायक अयोग्य घोषित हो सकते हैं, वहीं शिंदे गुट का दावा है कि उनके पास ज्यादा संख्या है, इसलिए उनकी तरफ से जारी व्हिप ही मान्य होगा।

दोनों तरफ से जारी हुआ व्हिप

शिवसेना के एकनाथ शिंद गुट ने व्हिप जारी करते हुए बीजेपी और सेना के उम्मीदवार राहुल नार्वेकर को अध्यक्ष पद के लिए वोट देने का आदेश दिया है. जबकि शिवसेना की तरफ से पहले ही व्हिप जारी हो चुका है. क्योंकि शिवसेना के बागी विधायकों ने अब तक दूसरी कोई पार्टी ज्वाइन नहीं की है, इसलिए वो इस व्हिप के दायरे में आते हैं. कल ही शिवसेना ने विधानसभा स्पीकर के चुनाव के लिए व्हिप जारी किया था, जिसमें शिवसेना और महाविकास आघाड़ी के सभी विधायकों को राजन साळवी को वोट देने का आदेश दिया गया था।

उद्धव ठाकरे ने किया था शिंदे को निष्कासित

एकनाथ शिंदे ने अप्रत्यक्ष रूप से एक बार फिर शिवसेना पर अपना दावा पेश किया है. उनका कहना है कि वो ही असली शिवसेना हैं. इसीलिए अयोग्यता का सवाल नहीं उठना चाहिए. वहीं शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे ने एकनाथ शिंदे को पार्टी विरोधी कामों में शामिल होने को लेकर पार्टी से निष्कासित कर दिया था. ऐसे में विधानसभा सत्र के दौरान जमकर हंगामे के आसार हैं. दोनों तरफ से व्हिप का उल्लंघन करने का ये मामला कोर्ट तक पहुंच सकता है.

फडणवीस ने भी शिंदे गुट को बताया असली शिवसेना

बोले- हमने पूरा किया बालासाहेब का सपना

मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मुंबई के होटल ताज प्रेसिडेंट में शनिवार को देर रात शिंदे गुट के विधायकों को संबोधित किया। इस दौरान मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी मौजूद रहे। फडणवीस ने कहा, 'हमें कभी नहीं लगा कि शिवसेना और भाजपा दो अलग-अलग दल हैं। हम बीच में अलग हो गए, लेकिन हम फिर से एक हो गए हैं। परिवार फिर से जुड़ गया।' उन्होंने कहा, 'हमारे साथ आए आप सभी सच्चे शिवसैनिक हैं। आपने सही मायने में बालासाहेब की विचारधारा को साथ लाया है। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें अब महाराष्ट्र के पिछले गौरव को वापस लाने के लिए मिलकर काम करना होगा।' उन्होंने विधायकों को संबोधित करते हुए कहा, 'हमने बालासाहेब का सपना पूरा किया है। आज सही मायने में शिवसेना-भाजपा की सरकार बनी है।' शिंदे ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में कई चीजों ने शिवसेना की छवि खराब की है। उन्होंने कहा, 'जिस तरह दाऊद से जुड़े मंत्रियों को बचाया जा रहा था, जिस तरह सावरकर का

अपमान किया जा रहा था, उससे शिवसैनिकों में बेचैनी है। यह दर्दनाक था कि ये सब शिवसेना की छवि को नुकसान पहुंचा रहे थे।' शिंदे ने आगे कहा कि उन्होंने सेना नेतृत्व को स्थिति समझाने की कोशिश की लेकिन वे समझ नहीं पाए और इससे आज की स्थिति पैदा हुई। उन्होंने कहा, 'अगर हम अपने मतदाताओं को न्याय नहीं दे सकते तो क्या बात है? अब देवेंद्र फडणवीस हमारे साथ हैं और उनके पास जबरदस्त अनुभव है।' शिंदे ने एक शिव सैनिक को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनने का मौका देने के लिए फडणवीस और भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को धन्यवाद दिया।

'मुझे कभी किसी गवर्नर ने लड्डू नहीं खिलाया'

पवार ने राज्यपाल पर साधा निशाना

मुंबई. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का राजभवन में लड्डू खाने का वीडियो खूब वायरल हुआ था और पूर्व मुख्यमंत्री शरद पवार ने राजभवन में इस वाकये को लेकर गवर्नर भगत सिंह कोश्यारी पर निशाना साधा. एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने पुणे में एक कार्यक्रम में गवर्नर पर ये तंज कसा है. पवार ने कहा, मैं कई शपथग्रहण समारोहों का हिस्सा रहा हूं, लेकिन कभी किसी गवर्नर ने मुझे मिठाई नहीं खिलाई और न ही मुझे बुके दिया. दरअसल, महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की नवनियुक्त मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को मिठाई खिलाते हुए वायरल तस्वीरों पर शरद पवार ने शनिवार को तंज कसा. पवार ने कहा, राज्यपाल के जनप्रतिनिधियों से व्यवहार में 'गुणात्मक बदलाव' देखने को मिल रहा है।

जेल में बाहर आया राम रहीम नकली? हाईकोर्ट पहुंचे श्रद्धालू बोले- हाव-भाव पहले जैसे नहीं

चंडीगढ़। जेल में बंद डेरा सच्चा सौदा का चीफ राम रहीम नकली है। असली का तो राजस्थान के उदयपुर से किडनैप हो चुका है, यह दावा चंडीगढ़ में रहने वाले डेरे के श्रद्धालू अशोक कुमार और कुछ अन्य ने किया है। उन्होंने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में पिटीशन दायर की है। जिसमें जेल से बाहर आकर उत्तर प्रदेश के बागपत आश्रम में रह रहे राम रहीम की जांच की मांग की है।

उनका कहना है कि इस राम रहीम के हाव-भाव पहले की तरह नहीं हैं। पिटीशन दायर करने वाले चंडीगढ़ के अलावा पंचकूला और अंबाला के रहने वाले हैं। उन्होंने हरियाणा सरकार, हनीप्रीत और

सिरसा डेरा के एडमिनिस्ट्रेटर पीआर नैन को पार्टी बनाया है।

यह किया दावा

डेरे के इन श्रद्धालुओं ने कहा कि उन्हें सूत्रों से पता चला कि असली डेरा चीफ को किडनैप करने के बाद नकली को जेल में बिठा दिया गया। इस नकली को अब असली बनाकर डेरे की गद्दी हड़पने की कोशिश की जा रही है। डेरे की गद्दी के लिए असली डेरा प्रमुख को मारा जा चुका है या फिर मार दिया जाएगा। जेल में बंद नकली राम रहीम की जांच होनी चाहिए।

बिहार में योगी फॉर्मूला- एक ही दिन में 'बुलडोजर' से ढहाए जा रहे 70 घर, पुलिस और लोगों के बीच झड़प

पटना। अगर किसी राज्य में बुलडोजर से अवैध निर्माण वाले घर गिराए जाते हैं तो वहां के लोग कहते हैं कि यहां भी योगी राज आ गया है। ताजा मामला है बिहार में जहां अब तक की बुलडोजर की सबसे बड़ी कार्रवाई हुई है।

बताया जा रहा है कि राजीव नगर थाना क्षेत्र के नेपाली नगर(दीघा) के इलाके में प्रशासन ने 70 मकानों को ध्वस्त करने में जुट गया है। प्रशासन ने इसके

लिए 17JCB की मदद ली है। इस दौरान कार्रवाई वाले इलाके में 2000 से ज्यादा पुलिस बल तैनात हैं। कार्रवाई शुरू होते ही लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस ने जब उन्हें हटाने की कोशिश की तो लोगों ने ठेले में किरोसिन छिड़ककर आग लगा दी, जिसकी चपेट में आने से कई लोग झुलस गए। वहीं इस दौरान लोगों ने जमकर पथराव भी किया है। अतिक्रमण विरोधी अभियान के दौरान पुलिस और स्थानीय लोगों के बीच हुई झड़प में सिटी एसपी (मध्य) पटना, अंबरीश राहुल घायल हो गए हैं।

जांच में हुआ खुलासा

कन्हैयालाल हत्याकांड का आरोपी ट्रेनिंग के लिए गया था पा

उदयपुर। उदयपुर में कन्हैयालाल हत्या कांड की जांच में बड़ा खुलासा हुआ है. उदयपुर के दो मौलानाओं रियासत हुसैन और अब्दुल रज्जाक ने दावत-ए-इस्लामी की ट्रेनिंग के लिए हत्याकांड के आरोपी मुहम्मद गौस को पाकिस्तान भेजा था. गौस के साथ वसीम अत्तारी और अखूतर रजा भी पाकिस्तान गया था. एनआईए ने इन तीनों को हिरासत में लिया है. सूत्रों के अनुसार, हत्याकांड की साजिश में दो मौलाना और दो वकील भी शामिल हैं, उन्हें भी हिरासत में लिया गया है. बताया जा रहा है कि आरोपियों की एक बैठक हुई थी जिसमें रियाज अत्तारी ने टेलर कन्हैयालाल को मारने की ज़िम्मेदारी ली थी. इस मीटिंग में रियाज, मोहम्मद गौस, आसिफ और मोहसिन शामिल थे।

खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत के हाथों डॉ. रोहित कुमार बरगाह की लिखी पुस्तक बौद्धिक संपदा अधिकार, मानव अधिकार एवं पर्यावरण का विमोचन

जोहार छत्तीसगढ़– सीतापुर।

सीतापुर शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर में अतिरिक्त कक्ष निर्माण भूमि पूजन कार्यक्रम के तहत डॉ. रोहित कुमार बरगाह द्वारा लिखित पुस्तक बौद्धिक संपदा अधिकार,मानवाधिकार एवं पर्यावरण का विमोचन अमरजीत भगत,खाद्य एवं संस्कृति मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा किया गया । बौद्धिक संपदा अधिकार, मानवाधिकार एवं पर्यावरण पुस्तक संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय अंबिकापुर सरगुजा छत्तीसगढ़ के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सीबीसीएस नए पाठ्यक्रम के तहत तृतीय सेमेस्टर में अनिवार्य विषय के रूप में लागू है। इस नई पाठ्यक्रम के विषय वस्तु को एशिक्षकों एवम विद्यार्थियों के अध्ययन अध्यापन करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए तीन अलग.अलग विषय बौद्धिक संपदा अधिकार,मानवाधिकार और पर्यावरण को समयोजित कर विद्यार्थियों के लिए एक साथ एक ही पुस्तक में पाठ्यक्रम का समायोजन करते हुए तैयार किया गया है। डॉ रोहित कुमार बरगाह, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र, शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर में पदस्थ है। यह पुस्तक सभी संकाय के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम अनुरूप तैयार किया गया है जो शिक्षकों। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए लाभप्रद साबित होगी। डॉ बरगाह द्वारा अभी तक कुल 5 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर में पदस्थ अन्य विभाग के प्राध्यापकों द्वारा भी पुस्तक का संपादन किया गया है जिसका विमोचन भी माननीय अमरजीत भगत खाद्य मंत्री के इसी कार्यक्रम के तहत किया गया है जिसमें प्रमुख रुप से ष्शोध प्रविधि एवं सांख्यिकी तकनीकष् 2022 पुस्तक डॉ रोहित कुमार बरगाहर डॉ क्रेसेंसिया टोप्पो, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, डॉ प्रवीण कुमार साहू, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष गणित,शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर ने संयुक्त रूप से वालनट पब्लिशर्स के सहयोग से प्रकाशित किया गया है। महाविद्यालय के ही प्राध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तक, बौद्धिक संपदा अधिकार अधिनियम का संपादन डॉ. रोहित कुमार बरगाह, सहायक प्राध्यापक,रसायन शास्त्र, डॉ. जुगल किशोर कुजूर सहायक प्राध्यापक हिंदी, शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर एवं डॉ सुशील कुमार टोप्पो सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव द्वारा इंटरनेशनल वालनट प्रकाशन के सहयोग से2021में प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार किया गया है। यह पुस्तक के शिक्षकों, विद्यार्थियों,शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में शशिमा कुजुर,प्राचार्य शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर, संयुक्त गुप्ता,अध्यक्ष जनभागीदारी समिति सीतापुर, गणेश सोनी, तिलक बेहरा,बदरुद्दीन, संदीप गुप्ता, मनीष गुप्ता, प्रेमदान कुजूर, परमेश्वर गुप्ता एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक गण उपस्थित थे।

एक नजर

बाइक की ठोकर से दो घायल

महासमुंद । बाइक सवार दो लोगों को पीछे से आ रही बाइक ने ठोकर मार दी। वार्ड 17 निवासी मनहरण लाल साहू ने पुलिस को बताया कि बीते 26 जून को वह अपनी बाइक से जगदीश प्रसाद साहू के साथ जा रहे थे। रास्ते में मधुलिका लॉज के पास पीछे से आ रही बाइक क्रमांक सीजी 06 जीडब्ल्यू 3882 के चालक वार्ड 1 निवासी हर्ष चंद्राकर ऊर्फकान्हा ने उनकी बाइक को ठोकर मार दिया। जिससे दोनों घायल हो गए। पुलिस ने धारा 279, 337 के तहत जुर्म दर्ज कर जांच में लिया है।

घायल व्यक्ति की मौत

महासमुंद । जिला जेल परिसर के सामने सड़क हादसे में घायल व्यक्ति की मौत के मामले में पुलिस ने जांच के बाद आरोपी वाहन चालक के खिलाफ जुर्म दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक बीते 12 फरवरी 2022 को डेरहाराम यादव को वाहन क्रमांक सीजी 04 डीडब्लू 3108 के चालक ने ठोकर मार दिया था। उनकी इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच में लिया था। पुलिस ने जांच के बाद गुरुवार को आरोपी बाइक चालक के खिलाफ धारा 304 ए के तहत जुर्म दर्ज किया है।

कोरोना संक्रमण के प्रसार को रोकने जिला प्रशासन सजग

कलेक्टर एवं एसपी ने अन्तर्राज्यीय चेक पोस्ट तिमेड़ और तारालागुड़ा का किया औचक निरीक्षण

बीजापुर । कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए बीजापुर जिला प्रशासन पूरी तरह सजग है, जिले में संक्रमण को रोकने की रणनीति के तहत अन्तर्राज्यीय सीमाओं में 24 घण्टे चौकसी बढ़ा दी गई है , जहाँ विभागीय तालमेल से 8-8 घण्टे शिफ्ट में ड्युटी लगाई गई । बिना कोविड जांच के जिले में प्रवेश पर पूर्ण पाबंदी है। कलेक्टर राजेन्द्र कटारा एवं पुलिस अधीक्षक आंजनेय वाष्णैय ने अन्तर्राज्यीय चेक पोस्ट तिमेड़ एवं तारालागुड़ा का औचक निरीक्षण कर अन्य प्रदेश महाराष्ट्र एवं तेलंगाना से आने वाले यात्रियों, वाहन चालक एवं व्यक्तियों की जानकारी ली। अभी तक किसी की पाजिटिव्ह होने की रिपोर्ट नहीं आयी है। चेक पोस्ट में स्वास्थ्य विभाग , पुलिस विभाग वन एवं पंचायत विभाग के कर्मचारियों का संयुक्त रूप से ड्युटी लगाई गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रत्येक व्यक्तियों की कोविड जांच की जा रही है। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर कटारा ने ड्यूटी में तैनात कर्मचारियों से आवश्यक जानकारी लेते हुऐ ड्युटी दौरान उनकी समस्याओं से भी अवगत होकर त्वरित निराकरण के निर्देश दिए जिसमें तिमेड़ में वन विभाग द्वारा निर्मित खाली भवन का उपयोग करने के लिए स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिया तो वहीं तारलागुड़ा में चेक पोस्ट नाका में आवश्यक संसाधन मोबाईल शौचालय, पेयजल , कुर्सी ,तखत एवं चेक पोस्ट के सामने की जमीन की समतलीकरण कर गिट्टी या मुरम का उपयोग कर सुव्यवस्थित करने के निर्देश दिए किसी भी चेक पोस्ट में बारिश को मद्देनजर रखते हुए असुविधा न हो इसके लिए सीईओ जनपद पंचायत विजय नारायण तिवारी को आवश्यक निर्देश दिए।

धमतरी कुरूद मंडी सदस्यों ने रामगोपाल अग्रवाल से भेंट कर मुख्यमंत्री के प्रति जताया आभार

अग्रवाल ने मंडी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने सदस्यों को दी शुभकामनाएं

धमतरी । कुरुद कृषि उपज मंडी में भार साधक समिति अध्यक्ष/ उपाध्यक्ष एवं सदस्य मनोनीत होने के पश्चात जिला अध्यक्ष शरद लोहाना के नेतृत्व में एवं महापौर विजय देवांगन, पूर्व जिला अध्यक्ष मोहन लालवानी मंडी अध्यक्ष धमतरी ओंकार साहू, मंडी अध्यक्ष कुरुद नीलम चन्द्राकर की उपस्थिति में मंडी सदस्य व वरिष्टनेता छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन रायपुर पहुचकर प्रदेश कांग्रेस कोषाध्यक्ष, नागरिक आपूर्ति निगम अध्यक्ष रामगोपाल अग्रवाल, खनिज विकास निगम अध्यक्ष गिरीश देवांगन को धन्यवाद ज्ञापित कर आशीर्वाद प्राप्त किया जिस पर श्री अग्रवाल, श्री देवांगन ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मंडी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने अध्यक्ष/उपाध्यक्ष सभी सदस्यों को शुभकामनाएं बधाई दी एवं सभी सदस्यों ने इस नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किये इस दौरान प्रमुख रूप से जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष मनोज साहू, धमतरी कृषि मंडी उपाध्यक्ष विजय प्रकाश जैन, व्यापारी प्रतिनिधि अरविंद दोषी, जिला पंचायत सभापति तारिणी चंद्राकर, वरिष्ठ कांग्रेस नेता भोलानाथ देवांगन, कुबेर चंद्राकर, अशोक देवांगन, अनिल सागर, अनिता ठाकुर, प्रमोद साहू, हितेंद्र केला, बिसौहा साहू, कोमल सिन्हा, बिशाखा साहू, गजेंद्र कुम्भकार, व्यासनारायण निषाद, भीखम साहू, भुवन प्रजापति, महिम शुक्ला, वैभव चन्द्राकर, उमेश कण्डरा, रिजवान रिज़वी, गोपी किशन चितेंद्र साहू,पारस साहू सहित अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बोड़ला विकासखंड के 41 ग्राम पंचायतों के सरपंच/सरपंच प्रतिनिधि पहुंचे राजधानी

कवर्धा । प्रदेश के कैबिनेट मंत्री व कवर्धा के विधायक श्री मोहम्मद अकबर से बोड़ला विकासखंड के 41 ग्राम पंचायतों के सरपंचों/सरपंच प्रतिनिधियों ने राजधानी रायपुर जाकर भेंट की। उन्होंने अपने-अपने ग्राम पंचायत के विकास कार्यों से संबंधित मांगे रखी व अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

मंत्री अकबर ने जमीन पर बैठकर ग्रामों के विकास के लिए की खुली चर्चा

मंत्री श्री मोहम्मद अकबर ने अपने शंकर नगर स्थित निवास कार्यालय के बगीचा में बैठकर आत्मियता पूर्वक सरपंचों व सरपंच प्रतिनिधियों की बातें सुनी। उन्होंने ग्राम पंचायतों की समस्याओं के बारे में जानकारी ली तथा विकास कार्य को लेकर उनकी राय मांगी। मंत्री ने उन्हें बताया कि उन्होंने विडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ग्राम पंचायतों की मांगों के बारे में पूछा था। जिस सरपंच ने भी शाला भवन की मांग की उसे तत्काल सहमति प्रदान कर दी गई थी। जिन ग्राम पंचायतों के लिए आंगनबाड़ी भवन की मांग रखी गई उसे भी सहमति प्रदान की गई। शाला भवन एवं आंगनबाड़ी भवनों के निर्माण का कार्य प्रारंभ भी करा दिया गया। ग्राम पंचायतों के अन्य मांगों पर भी कार्यवाही की जा रही है।

सरपंचों एवं सरपंच प्रतिनिधियों ने आज चर्चा के दौरान अपने ग्राम पंचायतों के लिए मांगे भी रखी। मंत्री मोहम्मद अकबर ने इस पर उचित कार्यवाही का भरोसा दिलाया।

बैठक में निम्न ग्राम पंचायतों के सरपंच उपस्थित थे।

युवती के पास अश्लील विडियों भेजने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेज जेल

उडिसा राज्य से हुआ गिरफ्तार

फरसगांव। युवती के पास अश्लील वीडियो भेजने वाले आरोपी को बड़ेडोंगर पुलिस ने उड़ीसा राज्य से गिरफ्तार कर न्यायालय के बाद जेल भेज दिया गया । बड़ेडोंगर थाना से मिली जानकारी के अनुसार 24 मई को थाना क्षेत्र की प्रार्थीया ने अभिव्यक्ति एप पर ऑनलाईन शिकायत दर्ज कराई की अज्ञात मोबाईल धारक के द्वारा प्रार्थिया को मोबाईल फोन पर अश्लील गन्दी गन्दी बात कर अश्लील फोटोग्राफ वॉटसप करता है, युवती के मना करने के बाद भी बार-बार फोन कर फोटो वायरल करने की धमकी देकर परेशान करता था, युवती की रिपोर्ट पर थाना

बडेडोंगर में अपराध क्रमांक 14/2022 धारा 509 (ख) भादवि 67 (क) आई. टी. एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया।

थाना बडेडोंगर से थाना प्रभारी ओंकार दीवान के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित कर अज्ञात आरोपी का पता- तलाश किया जा रहा था , इसी बीच 02 जुलाई को सायबर सेल कोण्डागांव से अज्ञात आरोपी का टॉवर लोकेशन ट्रेस किया गया, उक्त आरोपी का लोकेशन उडिसा राज्य के नवरंगपुर जिला में पाये जाने पर तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराकर टीम रवाना हुई, आरोपी को उसके निवासी से पकड़कर अभिरक्षा में लेकर पुछताछ के लिए थाना लाया गया, पुछताछ करने पर आरोपी द्वारा अपना नाम गुडुराम गाण्डा पिता सीताराम गाण्डा उम्र 22 वर्ष निवासी बिरीपुर पोस्ट बबई थाना रायघर जिला - नवरंगपुर (उड़िसा) का होना बताये, तथा अपराध कबुल करने पर अपराध में प्रयुक्त मोबाईल को आरोपी के पेश करने पर जप्त किया गया।

मुलाकिसोली ग्रेनाइट खदान लीज की प्रक्रिया निति विरूद्ध-मनीष कुंजाम

जोहार छत्तीसगढ़– सुकमा।

जिले के कोन्टा ब्लॉक के ग्राम पंचायत मुलाकिसोली ग्रेनाइट खदान के लिए फर्जी ग्राम सभा के माध्यम से प्रस्ताव पारित करने की बात सामने आ रही है। जिसको लेकर ग्रामीण भी आपत्ति दर्ज करते हुए जल्दी बैठक कर उचित निर्णय लेकर आगे की कार्रवाई करने की बात कही जा रही है। रविवार को पूर्व विधायक मनीष कुंजाम ने मुलाकिसोली ग्राम पंचायत पहुंचे। यहां पर पाए जाने वाले उच्च क्वालिटी की गौण खनिज ग्रेनाइट पत्थर का उत्खनन की जानकारी ली। उन्होंने ग्रामीणों को बताया कि 7 जुलाई से उक्त खदान के लिए ई टेंडर से खदान की नीलामी के लिए टेंडर प्रक्रिया प्रारंभ हो रही है। जिस पर ग्रामीणों ने कहा कि हमें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। और इस मामले को लेकर आज तक कभी ग्राम सभा भी नहीं हुआ है। अगर बिना ग्राम सभा के प्रस्ताव के यहां प्रक्रिया की जा रही है तो उक्त खदान की टेंडर प्रक्रिया पूरी तरह से अवैध है और जो दस्तावेज दिखाया जा रहा है। वह भी फर्जी दस्तावेज है क्योंकि ग्रामीण स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि यहां पर किसी भी प्रकार का ग्राम सभा का आयोजन नहीं हुआ है। मनीष कुंजाम ने कहा कि उक्त खदान के लिए ग्रामीण सहमत नहीं है। और यहां किसी को भी खदान चालू करने नहीं देना चाहते हैं। ग्रामीणों की मंशा स्पष्ट है यह जो खदान की प्रक्रिया हुई है वह पूरी तरह से गलत प्रक्रिया अपनाया गया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही यहां पर ग्राम सभा का आयोजन किया जाएगा। जिसमें कलेक्टर सहित अन्य अधिकारियों को बैठक में शामिल होने के लिए कहा जाएगा। साथ ही इस दौरान जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण मौजूद रहेंगे। ग्राम सभा में जो भी निर्णय आएगा उसके अनुसार खदान लगाने देना है या नहीं देना है। उस आधार पर ग्राम सभा से प्रस्ताव पारित किया जाएगा। जिसके बाद ग्राम सभा का प्रस्ताव कलेक्टर, मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा।

खदान आवंटन में फर्जी ग्राम सभा का प्रस्ताव

मनीष कुंजाम ने कहा कि ग्राम सभा के पास अधिकार होता है कि ग्राम सभा क्षेत्र में किसी भी प्रकार के कार्य के लिए ग्राम सभा की अनुमति की जरूरत होती है लेकिन यहां पर फर्जी ग्रामसभा के माध्यम से प्रस्ताव पारित किया गया है। ग्रामीण स्पष्ट कर रहे हैं कि खदान को लेकर किसी भी प्रकार का ग्राम सभा का आज तक कोई बैठक नहीं हुआ है। ऐसे में जो ग्राम सभा का प्रस्ताव की बात कही जा रही है वह फर्जी है। उन्होंने कहा कि पांचवी अनुसूची क्षेत्र इस तरह से बगैर ग्राम सभा के खदान का आवंटन प्रकिया अवैध है। इसको लेकर जल्द ही ग्रामीणों के साथ बैठक कर उचित कार्रवाई की जाएगी।

प्रतिबंध की मांग करेंगे,ग्रामीण

ग्रामीणों के मुताबिक जिलाधिकारी से माईनिंग के टेके की प्रकिया पर रोक की मांग करेगे मुलाकिसोली गाँव में स्थित माईन्स खदानों में खनन को प्रतिबंध लगाने संबंधी सारे प्रसासनिक आपचारिकता पुर्ण कर हम मांग करेंगे की टेके प्रक्रिया पर तत्काल रोक लगे मुलाकिसोली में स्थित पर्वत जिसकी धार्मिक मान्यता भी है व ग्रामीणों ने आदि काल से इस पर्वत की सुन्दरता में जो बस्तर की पहचान छिपाए बैठे हैं जो ग्राम को पूर्ण प्रकृति से जोडती है और हम ऐसे लिज पर देने नही देंगे।

कलेक्टर ने सरईडीह और अमरपुर गौठान का किया निरीक्षण

गौठानों में पहुंचकर रूरल इंडस्ट्रियल पार्क और आजीविका गतिविधियों का लिया जायजा

कोरबा । कलेक्टर संजीव झा ने कोरबा ब्लॉक के ग्राम पंचायत पहंदा के सरईडीह और विकासखण्ड कटघोरा ग्राम अमरपुर के गौठान का निरीक्षण किया। उन्होने अमरपुर गौठान में विकसित किए जा रहे रूरल इंडस्ट्रियल पार्क का भी जायजा लिया। कलेक्टर ने गौठानों में चल रही आजीविका गतिविधियों के संबंध में स्वसहायता समूह की महिलाओं से जानकारी ली। पहंदा गौठान में कार्यरत स्वसहायता समूह की महिलाओं ने बताया कि वे गौठान में सब्जी उत्पादन, बतख पालन, मछली पालन एवं वर्मी कम्पोस्ट निर्माण कर रही हैं जिससे उनकी आमदनी बढ़ी है। कलेक्टर झा ने गौठान में महिलाओं द्वारा किए जा रहे वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, मछली पालन, सब्जी -बाड़ी एवं मशरूम उत्पादन शेड का अवलोकन किया। उन्होने गौठानों में दो-दो चरवाहा रखने के निर्देश जिला पंचायत सीईओ को दिये। साथ ही गौठान में मौजूद पलाश के वृक्षों में लाख उत्पादन के लिए कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। कलेक्टर झा ने गौठान में संचालित गतिविधियों से नियमित आय सुनिश्चित करने के लिए बडे स्तर पर सब्जी उत्पादन, मछली पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन और बतख पालन करने के निर्देश दिये। उन्होने महिला समूहों को लाभान्वित करने के लिए पहंदा गौठान में दोनो सीजन में उद्यानिकी फसल लेने के निर्देश दिये।

परिवहन एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त टीम ने किया स्कूल वाहनों की जांच एवं चालकों का नेत्र एवं स्वास्थ्य परीक्षण

जोहार छत्तीसगढ़– बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेन्द्र सिंह के आदेशानुसार एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल के निर्देशन व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन के मार्गदर्शन में उप पुलिस अधीक्षक कमल नारायण शर्मा यातायात एवं जिला परिवहन अधिकारी अरविंद भगत, सउनि पंकज तंबोलीए प्रवीण साहू परिवहन विभाग सहित यातायात पुलिस बल एवं परिवहन विभाग स्टाफ द्वारा स्कुली वाहनों का मैकेनिक मुलाहिजा एवं सम्पूर्ण दस्तावेजों की जांच की गई। साथ ही चालकों का नेत्र एवं स्वास्थय परीक्षण जिला चिकित्सालय बेमेतरा के डॉ. गौतम कुमार, डॉ. नरेश जांगड़े, डॉ. अंकुश अग्रवाल चिकित्सा अधिकारी, ओंकार नेत्र सहायक अधिकारी, महेन्द्र साहू मेडिकल लेवर टेक्निशियन,शीतल बिसेन स्टाफ नर्स के द्वारा किया गया। जिसमें यातायात बेमेतरा पुलिस, परिवहन विभाग बेमेतरा एवं स्वास्थ्य विभाग बेमेतरा की संयुक्त टीम के द्वारा 03 जुलाई 2022 को जिले के 64 स्कुली वाहनों एकेडमिक स्कुल बेमेतरा, ज्ञानोदय पब्लिक स्कूल बेमेतरा, एंम्बो स्कुल बेमेतरा, सृजन स्कुल बेमेतरा, इंडियन पब्लिक स्कूल बेमेतरा, लांस स्कुल बेमेतरा, सरस्वती शिशु मंदिर, बचपन पब्लिक स्कूल बेरला, स्वामी नारायण गुरुकुल स्कूल बेरला, बीडीएस पब्लिक स्कूल बेमेतरा, पब्लिक स्कुल बेमेतरा, ज्ञानोदय विद्या निकेतन देवरबीजा, जिनियस पब्लिक स्कुल साजा, डायमंड पब्लिक स्कूल साजा, गुरुकुल विद्याल नवागढ़ एवं अन्य स्कुल बसो की जांच की गई। जिसमें मेडिकल चेक अप, वाहन के मैकेनिकल जांच, ड्राइविंग लाइसेंस, इंश्योरेंस, फि टनेस, फ ायर स्ट्वीगेशर, फ स्ट्रेडबाक्स एवं सभी वाहनों में सेफ्टी फायर एवं फर्स्टएड बाक्स, ईमरजेंसी डोर की आवश्यक रूप से चेकिंग की गई और कई वाहनों में छोटी मोटी खामीया एवं कागजात की कमी पाई गई है जिसको पूरा करने के निर्देश दिये गये हैं। चालकों एवं परिचालको का नेत्र एवं स्वास्थय परीक्षण जांच किया गया।

जिसमें 01 बस चालकों में नेत्र दोष एवं 08 बस चालकों में बीपी, 03 बस चालको में शुगर पाये जाने पर उन्हे जिला चिकित्सालय बेमेतरा में ईलाज कराने की समझाईश दी गयी। एवं आये हुए चालको एवं परिचालकों को यातायात नियमों, रोड सेफ्टी के संबंध में एवं स्कूली बच्चों को कैसे सुरक्षित घर लेकर जाना है उसके बारे में दिशा निर्देश दिया गया। स्कुली वाहन जांच के दौरान उप पुलिस अधीक्षक कमल नारायण शर्मा यातायात, जिला परिवहन अधिकारी अरविंद भगत, सउनि पंकज तंबोली, परिवहन विभाग, प्रवीण साहू परिवन विभाग, जिला चिकित्सालय बेमेतरा डाक्टर गौतम कुमार, डांक्टर नरेश जांगडे, डांक्टर अंकुश अग्रवाल चिकित्सा अधिकारी, शीतल बिसेन स्टाफ नर्स, ओंकार चंद्राकर नेत्र सहायक अधिकारी, महेन्द्र साहू मेडिकल लेवर टेक्निशियन, गोविंद सिंह काउंसलर, कृष्ण कुमार वर्मा चालक, इंद्रजीत चंद्राकर वार्ड ब्वाय, परिवहन विभाग बेमेतरा एवं यातायात बेमेतरा से खोमलाल साहू, आशीष तिवारी, भुपेन्द्र राजपूत सहित यातायात पुलिस अन्य अधिकारीध्कर्मचारी एवं स्कुली वाहन के चालक परिचालक उपस्थित रहे।

कांग्रेस नेता सूर्यकांत और अन्यों के यहां आयकर विभाग का छापा, पकड़ी गई अरबों रुपए की गड़बड़ी

दूसरे राज्य में धराया सूर्यकांत एयरपोर्ट से सीधे ले जाया गया आयकर कार्यालय

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

स्थानीय कांग्रेस नेता सूर्यकांत तिवारी और उसके दोस्त ठेकेदार अजय नायडू के निवास पर बीते गुरुवार की सुबह इनकम टैक्स की टीम द्वारा छापेमारी के बाद लगातार 36 घंटे से भी अधिक समय तक इनकम टैक्स विभाग की कार्रवाई चलती रही और दस्तावेज खंगाले जाते रहे जिनमें करोड़ों रुपए के लेनदेन संबंधी दस्तावेज और भारी मात्रा में नगद राशि पाए जाने की जानकारी मिली है।

कांग्रेस नेता सूर्यकांति वाली और उसके एक सहयोगी को अन्य प्रदेश से गिरफ्तार कर हवाई मार्ग से रायपुर लाए जाने के बाद एयरपोर्ट से ही सूर्यकांत तिवारी और उसके सहयोगी को आयकर विभाग की टीम द्वारा पूछताछ के लिए सीधे सिविल लाइन स्थित आयकर कार्यालय ले जाया गया है। भरोसेमंद सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार आयकर विभाग को सूर्यकांत तिवारी के महासमुंद निवास सहित अन्य स्थानों के छापेमारी में 100 करोड से भी अधिक के लेन-देन के साक्ष्य मिले हैं साथ ही 7 करोड़ के गहने हैं और 12 करोड़ के नकदी बरामदगी की भी खबर है। छापे में विभिन्न प्रकार के खनिजों को लेकर नगद राशि आने और 7 लोगों को बांटे जाने के लिए साक्षी मिले हैं। आयकर विभाग की टीम द्वारा सूर्यकांत तिवारी अजय नायडू सहित सूर्यकांत के तिवारी के सहयोगी निखिल चंद्राकर तथा ट्रांसपोर्टर जोगिंदर सिंह आदि आधा दर्जन ठिकानों पर एक साथ दबिश दी गई थी।

छापे की कार्रवाई में बेंगलुरु नागपुर दिल्ली भोपाल जबलपुर आदि जगहों के लगभग डेढ़ सौ आयकर अधिकारी शामिल थे वहीं लगभग डेढ़ सौ केंद्रीय सुरक्षा बल के जवान भी तैनात किए गए थे। आयकर विभाग द्वारा सूर्यकांत तिवारी और उसके साथी को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 131 के तहत पहले से ही पूछताछ के लिए सम्मन भेजा गया था। छात्र जीवन एनएसयूआई के माध्यम से अपना राजनीतिक सफर प्रारंभ करने वाले सूर्य कान की बाली छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व तक पंडित विद्या चरण शुक्ला कट्टर समर्थक के रूप में अपनी पहचान बना चुके थे। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद मुख्यमंत्री अजीत जोगी के अत्यंत करीब हो गए। और अब वे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निकटतम हस्तियों में से एक समझे जाते हैं। रिश्ते में दे छत्तीसगढ़ बीज विकास निगम के अध्यक्ष अग्नि चंद्राकर के दामाद भी है। जानकारी के मुताबिक सूर्यकांत टीवारी और अन्य के यहां छापे के पूर्व आयकर विभाग द्वारा 3 महीने तक नजर रखी गई थी साथ ही बैंक ट्रांजैक्शन संबंधित पूरी जानकारी एकत्र करने के बाद छापेमारी की कार्रवाई को अंजाम दिया गया। पूरी जांच के बाद और भी बड़े-बड़े लोगों के नाम सामने आने की संभावना प्रकट की जा रही है।

एक नजर

सतनाम साहित्य एवं कला मंच के तत्वावधान में साहित्य कला के संवर्धन पर चर्चा

जोहार छत्तीसगढ़–बिलासपुर।

रविवार को साहित्य एवं कला को समर्पित पंजीकृत संस्था सतनाम साहित्य एवं कला मंच कार्यालय सतनाम भवन,अमेरी, बिलासपुर छग पंजीयन क्रमांक.122202261183 में प्रदेशाअध्यक्ष गजानंद पात्रे सत्यबोध, मधुराज सिंह लहरे सचिव महेंद्र चतुर्थी,संयुक्त सचिव, रामकुमार लहरे कार्यकारिणी सदस्य, असकरण दास जोगी प्रवक्ता, चैतराम टंडन कार्यकरिणी सदस्य,मणीशंकर दिवाकर उपकोषाध्यक्ष, इन सभी के उपस्थिती में सतनाम साहित्य एवं कला मंच के तत्वावधान में साहित्य एवं कला के संवर्धन पर चर्चा किये। उपस्थित सभी कमलकार अपनी अपनी रचना प्रस्तुत कर बैठक को सफल बनाया। सभी की उपस्थिती उम्दा रहा। भविष्य में आने वाले समय में आने भव्य कवि सम्मेलन आयोजन के लिए प्रस्ताव भी पारित किया गया।

गौठानों में कार्यरत स्व सहायता समूहों के हितग्राहियों को अनुदान राशि का वितरण 5 को

कांकेर । प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा 05 जुलाई को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य डेयरी उद्यमिता विकास एवं अन्य योजनाओं के अभिसरण से गोधन न्याय योजना अन्तर्गत गौठानों में कार्यरत स्व सहायता समूहों के हितग्राहियों को अनुदान राशि का वितरण किया जाएगा। इसके लिए कांकेर विकास खंड के ग्राम पंचायत पोटगांव में कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें जनप्रतिनिधियों, पंचायत प्रतिनिधियों, स्व सहायता समूहों के हितग्राहियों, गौठान समिति के सदस्यों सहित सभी संबंधितों को उपस्थित होने का अनुरोध किया गया है।

बालकोनगर में आयोजित जगन्नाथ रथ यात्रा उत्सव में उमड़े भक्तजन

कोरबा । भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा बालकोनगर उत्कल भारती समिति ने धूमधाम से आयोजित की। बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक अभिजीत पति सहित अनेक बालको अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके परिवारजनों और नगरवासियों ने धार्मिक अनुष्ठानों में हिस्सा लेकर भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा एवं बलभद्र को रथ पर आसीन किया। पति की अगुवाई में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने रथ खींचकर पुण्य अर्जित किया। रथ यात्रा के आगे चल रहे कर्मा नर्तकों के दल ने तालबद्ध नृत्य से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। रथयात्रा बालकोनगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई रामलीला मैदान में बनाए गए गुंडिचा मंदिर तक पहुंची, जहां श्रद्धालुओं ने भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र की स्थापना कर उनकी आराधना की। 01 जुलाई से 09 जुलाई तक गुंडिचा मंदिर रामलीला मैदान में धार्मिक अनुष्ठान संपन्न होंगे। बालकोनगर में 41 वर्षों से रथ यात्रा उत्सव आयोजित किए जाने की परंपरा है।

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला में बाल कैबिनेट का गठन

कांकेर । बच्चों के सर्वांगण विकास के लिए आज दिनांक 02.07.2022 को शासन के बाल कैबिनेट का गठन किया गया। कैबिनेट में प्रधानमंत्री के रूप में डिकेश्वर पटेल, मुख्यमंत्री कु. मोनिका यादव, शिक्षा मंत्री कु. निकिता सिन्हा, वित्त मंत्री मोहित कुमार नाग, स्वास्थ्य मंत्री कु. सुनीता मंडावी, खेल मंत्री पियुष कुमार मंडावी, पर्यावरण मंत्री कु. आंचल साहू, सांस्कृतिक मंत्री कु. सृष्टि नेताम, सुरक्षा मंत्री पियुश कुमार, पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री मोहित नाग, कानून मंत्री कु. नीकिता सिन्हा को बनाया गया । उक्त कार्यक्रम में सरपंच रोहिदास नेताम, शाला प्रबंधन समिति अध्यक्ष सुखी नेताम, संरक्षक सुखचंद नेताम, प्रधान अध्यापु दीपक झा, शिक्षक कुं. उके, राजेश साहू, रमा साहू, हेमलता जैन, मंगऊराम पोटाई, फुलबती कुलदीप एवं सदस्य एवं पालकगण उपस्थित थे ।

जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु 3 दिवसीय जशपुर मानसून इन्फ्लुएंसर्स मीट कार्यक्रम का किया आयोजन

जोहार छत्तीसगढ़–जशपुरनगर।

जिला प्रशासन द्वारा जशपुर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आगामी 22 से 24 जुलाई 2022 को 3 दिवसीय जशपुर मॉनसून इन्फ्लुएंसर्स मीट कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें कंटेंट क्रिएटर और सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स को विभिन्न पर्यटन स्थल घूमने जैसी अन्य गतिविधियां शामिल है। इस हेतु इंफ्लुएंसर्स 10 जुलाई तक पंजीयन कर सकते है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले के विभिन्न पर्यटन स्थलों को देखने एवं अन्य गतिविधियों में हिस्सा लेने हेतु 20 कंटेंट क्रिएटर और सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स का चयन किया जाएगा। जिन्हे जिले के विभिन्न झरनों और पर्यटन स्थानों को देखने, ट्रेकिंग, प्रकृति की सैर, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी,गांव का दौरा, आदिवासी संस्कृति की झलक, शिल्प बनाना और जातीय पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, पाक पर्यटन के क्षेत्र में जशपुर जिले का संपूर्ण अन्वेषण, और इको.टूरिज्म जैसी गतिविधियों में शामिल होने का मौका मिलेगा। यह आयोजन छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड, ट्रिप्पी हिल्स, मध्यम और स्थानीय पर्यटन स्व सहायता समूह द्वारा समर्थित है। साथ ही जशपुर में ठहरने, यात्रा करने और खाने का व्यय जिला प्रशासन जशपुर और छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड द्वारा वहन किया जाएगा। जिला प्रशासन द्वारा छत्तीसगढ़ पर्यटन के पूर्वोत्तर भाग में टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए भारत से आने वाले सभी प्रभावशाली लोगों और कंटेंट क्रिएटर्स से इस कार्यक्रम मे अधिक से अधिक संख्या में हिस्सा लेकर कार्यक्रम को सफ ल बनाने की अपील की गई है। इस रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 10 जुलाई 2022 नियत की गई है। इच्छुक व्यकित लिंक के माध्यम से अपना ऑनलाईन पंजीयन कर सकते है। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए 07763.299151, 7587731093, एव 7379882342 पर संपर्क किया जा सकता है। साथ ही जिला जशपुर के बारे में अधिक जानकारी के लिए साइट का अवलोकन कर सकते है।

सीतापुर पुलिस ने शातिर महिला गांजा तस्कर को पकड़ा

जोहार छत्तीसगढ़–सीतापुर।

अवैध मादक पदार्थ के व्यापार में लिप्त लोगों पर लगाम लगाने के लिए सरगुजा पुलिस द्वारा नवा बिहान अभियान संचालित किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत सीतापुर पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि सीतापुर के जोबाटिकरा में एक 64 वर्षीय वृद्ध महिला द्वारा गांजा का अवैध व्यापार किया जा रहा है, सीतापुर पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर, महिला के घर में छापेमारी की जिसमें, सीतापुर पुलिस ने 700 ग्राम मादक पदार्थ गांजा बरामद किया। जिस महिला के पास से गांजा बरामद हुआ है। वह सीतापुर थाना अंतर्गत जोबाटिकरा निवासी 64 वर्षीया खातुन बीबी है। जो लगातार गांजा बेचने का कार्य कर रही थी। सीतापुर पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट 20 बी, के तहत कार्रवाई करते हुए महिला को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है। वही जो हमने सीतापुर थाना प्रभारी रूपेश नारंग से गांजा तस्करों के बारे में बात की तो उन्होंने बताया कि सीतापुर क्षेत्र में लगातार गांजा तस्कर सक्रिय रहते हैं कारण यह है कि उड़ीसा क्षेत्र से गांजा लेकर इसी रास्ते से तस्कर गुजरते हैं। और हमारे द्वारा जो रास्ते हैं उनकी निगरानी की जाती रहती है, इस साल लगभग हमारे द्वारा 22 से 25 गांजा तस्करों को पकड़ा गया है। और गांजा तस्करी में जितने भी लोग लगे हैं उसके ऊपर हमारी निगरानी बनी रहती है। और सीतापुर पुलिस द्वारा लगातार उनके ऊपर कार्रवाई की जा रही है।

नवपदस्थ कलेक्टर ने परिचयात्मक बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

कवर्धा । जिले के नवपदस्थ कलेक्टर जनमेजय महोबे ने कबीरधाम जिलें में 19 वें नम्बर के कलेक्टर का पदभार संभालने के जिला स्तरीय सभी अधिकारियों और कलेक्टोरेट संयुक्त परिसर मे सभी विभागों के लिपिक वर्ग के कर्मचारियों की साझा बैठक ली। नपदस्थ कलेक्टर महोबे ने अधिकारी-कर्मचरियों की संयुक्त बैठक लेकर सभी का परिचय प्राप्त किया। उन्होने कहा कि जिले के सभी अधिकारी-कर्मचारियो को शासन-प्रशासन के प्रति आमलोगों का विश्वास बढ़ाने के लिए जिले के सभी अधिकारी-कर्मचारियों को निष्ठापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करें। उन्होने ने कहा कि राज्य शासन की प्राथमिकता वाली जनकल्याणकारी योजनाओं और अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं का धरातल पर बेहतर क्रियान्वयन होना चाहिए, इसके लिए सभी योजनाओं को अमलीजामा पहनाने तथा जिले के बेहतरी के लिए किए जाने वाले कार्यों में सभी अधिकारी-कर्मचारी की अनिवार्य भागीदारी होना आवश्यक है। उन्होने कहा कि शासन की सभी योजनओं की क्रियान्वन की वास्तविक जानकारी लेने के लिए जिले के गांव से लेकर सूदूर वनांचल तक सभी क्षेत्रों को भ्रमण करें और मैदानी स्तर पर ही उन सभी योजनाओं को और बेहतर कैसे बनाए इस संबंध में संबधित विभाग अपना कार्ययोजना तैयार कर लें।

समय-सीमा में कार्यो का सम्पादन को बताया अपनी पहली प्राथमिकता, अब समय सीमा की बैठक होगी सुबह 10 बजे

कलेक्टर महोबे ने जिले के सभी अधिकारी-कर्मचारियों को कबीरधाम जिले को प्रत्येक क्षेत्रो में अग्रणी बनाने के लिए उत्कृष्ट कार्यों का सम्पादन करने को कहा है। उन्होंने समाज के अंतिम पंक्ति के लोगो को शासकीय योजनाओं का लाभ सुनिश्चित कराने तथा आम जनता के हित में कार्य करने के लिए समय-सीमा में शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन को अपनी पहली प्राथमिकता बताया।

नगर पालिका परिषद जशपुर में 11 से शाम 5 बजे तक बनाया जा रहा आयुष्मान कार्ड

हितग्राही राशन एवं आधार कार्ड के साथ नगर पालिका परिषद में उपस्थित होकर बनवा सकते है अपना आयुष्मान कार्ड

जोहार छत्तीसगढ़–जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना व डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना अंतर्गत नगर पालिका परिषद जशपुर में प्रतिदिन सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। सीएमओ नगर पालिका ने बताया कि नगर पालिका जशपुर के अंतर्गत आने वाले सभी हितग्राही जिनका आयुष्मान कार्ड नहीं बना है वे अपना राशन कार्ड एवं आधार कार्ड के साथ नगर पालिका परिषद में उपस्थित होकर अपना आयुष्मान कार्ड बनवा सकते है।

उल्लेखनीय है कि आयुष्मान भारत योजना अंतर्गत डॉ. खूबचंद बघेल योजना के तहत प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख तक का मुफ्त इलाज प्रदान किया जाता है। इस हेतु परिवार के प्रत्येक सदस्य का आयुष्मान कार्ड बनाया जाना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि सभी नागरिक समय रहते अपना आयुष्मान कार्ड बनवा ले, जिससे किसी विपरीत परिस्थिति में इसका लाभ प्राप्त कर सकें। आयुष्मान कार्ड के माध्यम से राज्य के निजी एवं शासकीय चिकित्सालयों के साथ ही विभिन्न राज्यों के पंजीकृत चिकित्सालय में इस कार्ड से आसानी से ईलाज कराया जा सकता है। इस संबंध में अधिक जानकारी हेतु टोल फ्री नंबर 104 या मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय में संपर्क कर सकते है।

भारतीय मार्शल आर्ट एकेडमी के तत्वधान में कराटे समर कैंप का हुआ समापन

एनटीपीसी लारा मैत्री नगर में कराटे समर कैंप का हुआ समापन

जोहार छत्तीसगढ़–रायगढ़।

30 दिवसीय कराटे समर कैंप का हुआ समापन

भारतीय मार्शल आर्ट एकेडमी के तत्वाधान में एनटीपीसी लारा स्थित मैत्री नगर उत्कर्ष क्लब में 30 दिवसीय कराटे समर कैंप का समापन किया गया। समापन समारोह में आए मुख्य अतिथि एच ओ पी लारा दिवाकर कौशिक ने बताया कि इस कैंप में यूपी के लखनऊ जिले से आए कोचो के दिशा निर्देश में कराटे समर कैंप का आयोजन हुआ जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया समापन समारोह में बच्चों ने कराटे के कई सारे टेक्निक्स जैसे किक पंच ब्लॉक थ्रोइंग का बेहतरीन प्रदर्शन कर के दिखाया उन्होंने बताया कि आज के दौर में कराटे सीखना सब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है हमारा पूरा प्रयास है कराटे प्रशिक्षण को नियमित रूप से प्रैक्टिस के लिए उत्कर्ष क्लब में अनुमति मिले ताकि बच्चे आत्मनिर्भर हो साथ ही साथ एक अच्छे कराटे खिलाड़ी बनकर देश का नाम रोशन करें। इसी के साथ सम्मानित सदस्यों में जीएम ओ-एम जे एस एस मूर्ति,जीएम एफ एम राजीव रंजन, जीएम ऑपरेशन एस के राय, एचओएच आर कन्हैया दास, उत्कर्ष क्लब वाइस प्रेसिडेंट एसके गुप्ता, उत्कर्ष क्लब सेक्रेटरी यूके मिश्रा, के साथ-साथ रतन कुमार व रमाकांत शिवहरे के साथ-साथ बहुत सारे सम्मानित सदस्य मौजूद रहे भारतीय मार्शल आर्ट के संस्थापक राकेश कुमार गुप्ता ने बताया हमारा पूरा प्रयास होता है देश के अलग-अलग हिस्सों में कराटे का प्रचार प्रसार करना ताकि आज के दौर में बालिकाएं सुरक्षित रहें और स्वयं आत्मनिर्भर बने। भारतीय मार्शल आर्ट के सचिव राहुल कुमार पटेल ने बताया की हमारा पूरा प्रयास होता है बच्चे आत्मरक्षा के साथ-साथ मेडलिस्ट बने तथा डिस्टिक स्टेट और नेशनल लेवल पर मेडल जीतकर देश का नाम रोशन करें खेल से बहुत सारी सरकारी जॉब के चांस भी मिलते हैं खिलाड़ी जहां खेल कर अपने आप को स्वस्थ रखता है तो वही खेल के माध्यम से उसके पास अच्छी नौकरी के साथ-साथ समाज में अलग पहचान बनती है वर्तमान में एनटीपीसी लारा स्थित कराटे कोच रोहित कुमार, व अल्ताफ खान के नेतृत्व में बच्चों ने कई सारे कराटे के गुण सीखें तथा वर्तमान में इन्हीं कोचो के माध्यम से रायगढ़ में कराटे का प्रचार प्रसार होगा तथा रायगढ़ भी एक कराटे गढ़ बन कर उभरे गा जहां से बच्चे रायगढ़ के लिए मेडल जीतेंगे और पूरे छत्तीसगढ़ में जीत का परचम लहराएंगे। इस अवसर कराटे खिलाड़ियों के साथ अभिभावकगण मौजूद।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -**नारायण बाईन,** फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in